h lmdH$ AmamYZm ^d-OZ VmaUhma

मुनि श्री कमलकुमार

भैक्षव शासन में हुए, श्रावक श्रेष्ठ अनेक।
गुलाब चन्द जी लूणिया, हैं उनमें से एक।।

श्रावक जीवन सफल हो, रखकर लक्ष्य महान्।
गुलाबचन्दजी ने किया, इस कृति का निर्माण।।

आत्मार्थी ज्ञानी पुरुष, कर सकते यह काम।
सोचें, समझें,/ध्यान दें, पायें भव विश्राम।।

तन्मयता पूर्वक करें, इसका नित संगान।
कर अन्तर आलोचना, करें शीघ्र कल्याण।।

हुआ जान अनजान में, जो भी दुष्कृत कार्य।
होगा इसके पाठ से, शुद्ध सकल अनिवार्य।

श्री तुलसी गुरुदेव की, कृपा हुई अनपार।
'अमृत कलश' भाग एक में, पढ़े सदा नर–नार।।

रत्ना औ पुखराज का, स्वप्न हुआ साकार।
चन्द्रा का सहयोग भी, मिला सहज हर बार।।

छन्द

है 'श्रावक आराधना', भव जल तारणहार,
गुलाबचन्दजी लूणिया, का अनुपम उपहार।
का अनुपम उपहार, रतना ने खूब सजाया,
आत्मार्थी लोगों ने, अपना भाग्य सराया।
शब्द–शब्द की अनुप्रेक्षा कर, कर लें आत्मोद्धार,
है 'श्रावक आराधना', भव–जन तारणहार।।